भारत सरकार

संस्कृति मंत्रालय

राज्यसभा

अतारांकित प्रश्न संख्याः 521

उत्तर देने की तारीख: गुरुवार, 23 जुलाई, 2026

1 श्रावण, 1948 (शक)

मोइदाम संख्या-2 का संरक्षण

521.**श्री जोगेन मोहन**:

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा वर्ष 2000-2003 के दौरान उत्खनन किए गए असम के चराइदेव में स्थित मोइदाम संख्या-2 के संरक्षण की वर्तमान स्थिति से अवगत है;

(ख) यदि हाँ, तो अब तक किए गए संरक्षण उपायों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या सरकार इसके संरक्षण और अनुरक्षण के लिए कोई और कदम उठाने का विचार रखती है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति और पर्यटन मंत्री
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (ग):असम के चराइदेव का मोइदम सं. 2 भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत एक केंद्रीय संरक्षित स्मारक है।भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, आवश्यकता और संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार, समय-समय पर, चराईदेव केमोइदम सं.2 का संरक्षण कार्य करता है और इनस्मारकों का संरक्षण किया जाना एक सतत् प्रक्रिया है।चराईदेव का मोइदम सं.2 भली-भांति परिरक्षित है और वर्ष2024 में नई दिल्ली में आयोजित विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र के दौरान "मोइदम्स–अहोम राजवंश की टीला दफ़न प्रणाली" को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था।चराइदेव के मोइदम सं. 2 में किए गए संरक्षण कार्यों का विवरणअनुबंध-I के रूप में संलग्न है।

अनुबंध-I

राज्य सभा में दिनांक 23.07.2026 को उत्तरार्थ अतारांकित प्रश्न सं. 521 के भाग (क) से (ग) के उत्तर में संदर्भित अनुबंध

उत्खनन के पश्चात् मोइदम सं. 2, मोइदम समूह, चराईदेव में संरक्षणकार्य

- चराइदेव में मोइदम सं.2 (मोइदमों के समूह) पर संरक्षण का काम भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, गुवाहाटी मंडल ने उत्खनितमोइदम सं.2 की संरचनात्मक मजबूती बनाए रखने, जल निकासी में सुधार करने और इसके मूल स्वरूप को सुरक्षित रखने के लिए कई संरक्षण उपाय किए थे।
- जल निकासी पाइप की समय-समय पर सफाई और रखरखाव को आसान बनाने के लिए निरीक्षण चैंबर के साथ एक छिपी हुईजल निकासी प्रणाली बनाई गई थी, जिससे बारिश के पानी की सही तरीके से निकासी सुनिश्चित हो सके।
- स्मारक के ऐतिहासिक स्वरूप को बनाए रखते हुए सुरक्षित आवाजाही के लिए, विशेष आकार की ईंटों का उपयोग करके मोइदम के भीतरी कक्ष तक जाने वाला एक सही ढंग से डिज़ाइन किया गया रास्ता बनाया गया था। मोइदम के फर्श को पारंपरिक चूना-सुर्खी मोर्टार में विशेष आकार की ईंटें लगाकर मजबूत किया गया था, ताकि मूल निर्माण सामग्री और तकनीकों के साथ तालमेल बना रहे।
- मोइदम के मेहराब के अंदर के हिस्से और प्रवेश द्वार के मेहराब पर चूने और सुर्खी से टिपकारी का काम किया गया था, ताकि चिनाई के जोड़ों को मज़बूत किया जा सके और इसे और खराब होने से बचाया जा सके। मोइदम की छत पर बने छेद को बंद कर दिया गया था ताकि बारिश का पानी अंदर न आ सके और ढांचे के अंदरूनी हिस्से को नमी से होने वाले नुकसान से बचाया जा सके।
- मोइदम के खुले हिस्से की ढलानों पर घास भी लगाई गई थी, ताकि मिट्टी के कटाव को कम किया जा सके और बारिश के असर से मिट्टी की सतह को स्थिर रखा जा सके।
- संरक्षण के इन उपायों के बावजूद, मोइदम सं.2 का उत्खनन वाला हिस्सा मौसम और कटाव से खराब होने के खतरे में बना रहा। इसलिए, वित्तीय वर्ष 2022-23 में, उत्खनित मोइदम को संरक्षित करने का निर्णयलिया गया। इसके लिए मूल भीतरी कक्ष तक जाने वाला एक मेहराबदार रास्ता बनाया जाएगा और बाद में उत्खनन वाले हिस्से को उपयुक्त मिट्टी से भरकर मोइदम को उसके मूल आकार में वापस लाया जाएगा।
- प्रस्तावित मेहराबदार रास्ता मूल दफन कक्ष तक स्थायी और सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित करेगा, साथ ही खुदाई वाले हिस्से को वैज्ञानिक तरीके से फिर से ढकने और पर्यावरण से होने वाले और नुकसान से बचाने में मदद करेगा।
- यह काम अभी चल रहा है। चल रहे संरक्षण कार्यक्रम के तहत, मोइदम सं.2 की अष्टकोणीय ईंट की दीवारों से जमा मलबा वैज्ञानिक तरीके से हटा दिया गया है और उन्हें उनके मूल आकार में बहाल कर दिया गया है।
- मूल मेहराब की भीतरी दीवारों पर भी पारंपरिक चूने के गारे (लाइम मोर्टार) से प्लास्टर किया गया है, जिसमें स्थापित संरक्षण सिद्धांतों के अनुसार उपयुक्त सामग्री और तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है।

*****